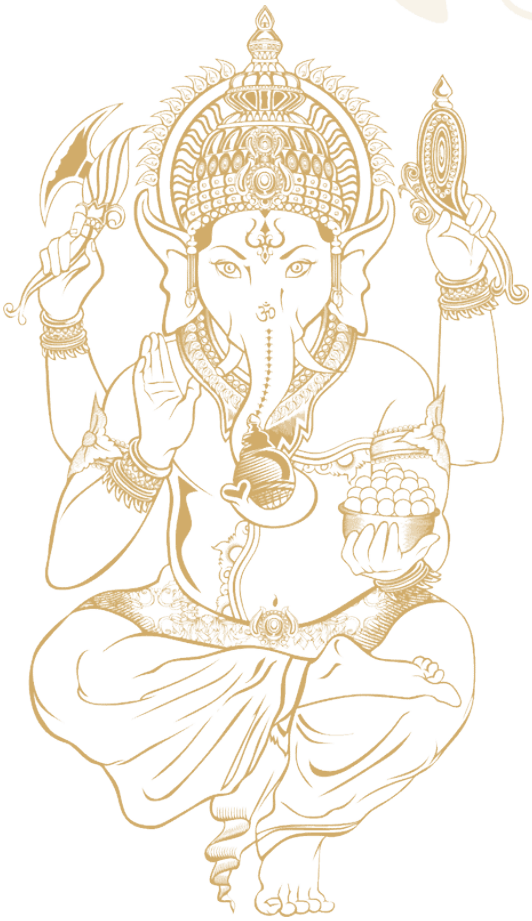

Mr.PRADEEP SHARAF

19 Sep 1981

12:05 AM

Jabalpur

Model: Web-MyKundli

Order No: 119117301

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**18-19/09/1981**
दिन	शुक्र-शनिवार
जन्म समय	**00:05:00 घंटे**
इष्ट	45:18:24 घटी
स्थान	**Jabalpur**
राज्य	Madhya Pradesh
देश	India

अक्षांश	23:10:00 उत्तर
रेखांश	79:57:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:10:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	23:54:48 घंटे
वेलान्तर	00:05:45 घंटे
साम्पातिक काल	23:45:10 घंटे
सूर्योदय	05:57:38 घंटे
सूर्यास्त	18:10:48 घंटे
दिनमान	12:13:10 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	02:08:42 कन्या
लग्न के अंश	12:44:24 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मिथुन - बुध
राशि-स्वामी	**वृष - शुक्र**
नक्षत्र-चरण	**कृतिका - 3**
नक्षत्र स्वामी	सूर्य
योग	वज्र
करण	गर
गण	राक्षस
योनि	मेष
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	वैश्य
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	गरुड़
युँजा	पूर्व
हंसक	भूमि
जन्म नामाक्षर	उ-उदय
पाया(राशि-नक्षत्र)	लौह - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1903	भाद्रपद	28
पंजाबी	संवत : 2038	आश्विन	4
बंगाली	सन् : 1388	आश्विन	3
तमिल	संवत : 2038	पुरुटासी	3
केरल	कोल्लम : 1157	कन्नी	3
नेपाली	संवत : 2038	आश्विन	4
चैत्रादि	संवत : 2038	आश्विन	कृष्ण 6
कार्तिकादि	संवत : 2038	भाद्रपद	कृष्ण 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि ____: 5
तिथि समाप्ति काल _____: 19:04:13
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र ____: भरणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 10:20:28 घंटे
जन्म योग _____: कृतिका
सूर्योदय कालीन योग ____: हर्षण
योग समाप्ति काल _____: 23:23:56 घंटे
जन्म योग _____: वज्र
सूर्योदय कालीन करण ____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 08:25:41 घंटे
जन्म करण _____: गर
भयात _____: 34:21:20
भभोग _____: 55:20:05
भोग्य दशा काल _____: सूर्य 2 वर्ष 3 मा 6 दि

घात चक्र

मास _____: मार्गशीर्ष
तिथि _____: 5-10-15
दिन _____: शनिवार
नक्षत्र _____: हस्त
योग _____: शुक्ल
करण _____: शकुनि
प्रहर _____: 4
वर्ग _____: सर्प
लग्न _____: वृष
सूर्य _____: वृश्चिक
चन्द्र _____: कन्या
मंगल _____: धनु
बुध _____: कन्या
गुरु _____: मकर
शुक्र _____: मकर
शनि _____: तुला
राहु _____: मकर

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

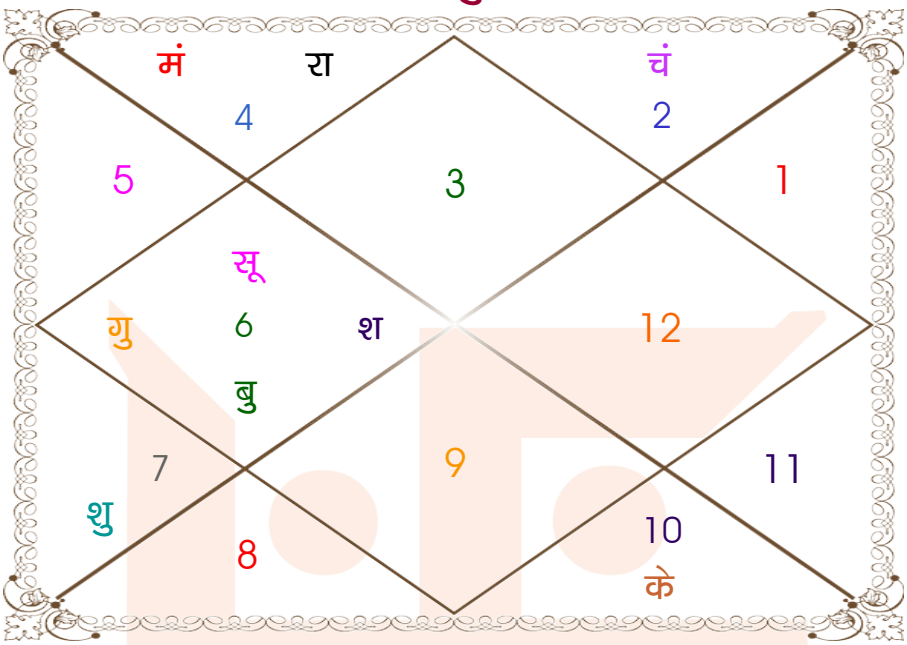

चन्द्र कुंडली

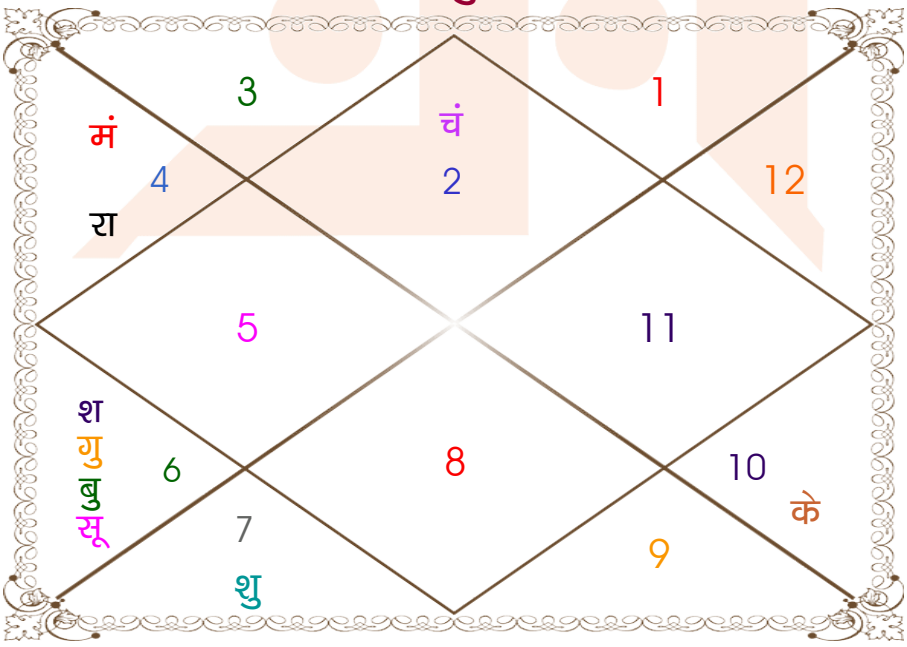

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

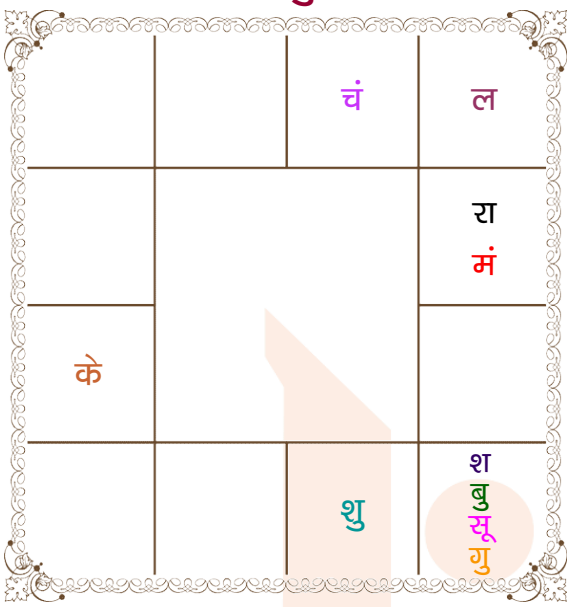

लग्न कुंडली

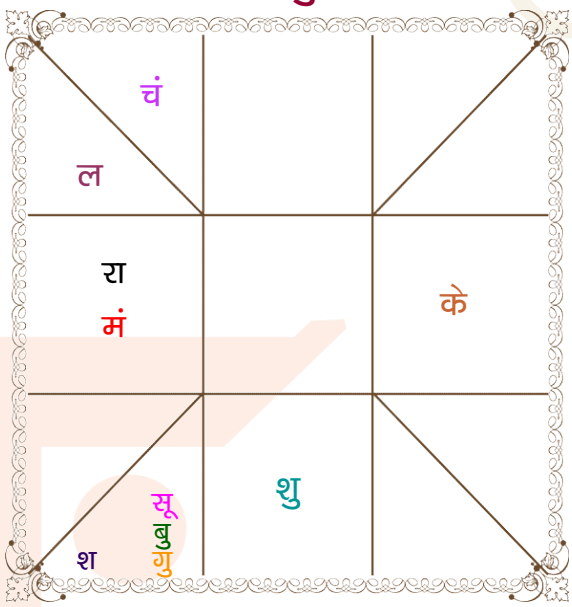

विंशोत्तरी
सूर्य 2वर्ष 3मा 6दि
सूर्य

19/09/1981

25/12/2097

सूर्य	26/12/1983
चन्द्र	25/12/1993
मंगल	25/12/2000
राहु	25/12/2018
गुरु	25/12/2034
शनि	25/12/2053
बुध	25/12/2070
केतु	25/12/2077
शुक्र	25/12/2097

योगिनी
उल्का 2वर्ष 3मा 6दि
सिद्धा

26/12/2019

25/12/2026

सिद्धा	06/05/2021
संकटा	25/11/2022
मंगला	04/02/2023
पिंगला	26/06/2023
धान्या	25/01/2024
भ्रामरी	04/11/2024
भद्रिका	25/10/2025
उल्का	25/12/2026

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	12:44:24	324:26:44	आर्द्रा	2	6	बुध	राहु	बुध	---
सूर्य			कन्या	02:08:42	00:58:35	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	सम राशि
चंद्र			वृष	04:57:41	14:26:29	कृतिका	3	3	शुक्र	सूर्य	शनि	मूलत्रिकोण
मंगल			कर्क	16:53:50	00:37:15	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	नीच राशि
बुध			कन्या	27:51:57	01:09:05	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	गुरु	स्वराशि
गुरु			कन्या	21:41:48	00:12:36	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि
शुक्र			तुला	13:11:27	01:09:44	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	बुध	मूलत्रिकोण
शनि		अ	कन्या	17:06:49	00:07:12	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	शनि	मित्र राशि
राहु	व		कर्क	06:28:14	00:04:05	पुष्य	1	8	चंद्र	शनि	बुध	शत्रु राशि
केतु	व		मक	06:28:14	00:04:05	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			वृश्चि	03:19:19	00:02:13	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	---
नेप			वृश्चि	28:33:13	00:00:30	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	शनि	---
प्लूटो			कन्या	29:32:52	00:02:11	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	---
दशम भाव			मीन	02:21:22	--	पू०भाद्रपद	--	25	गुरु	गुरु	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:35:50

लग्न-चलित

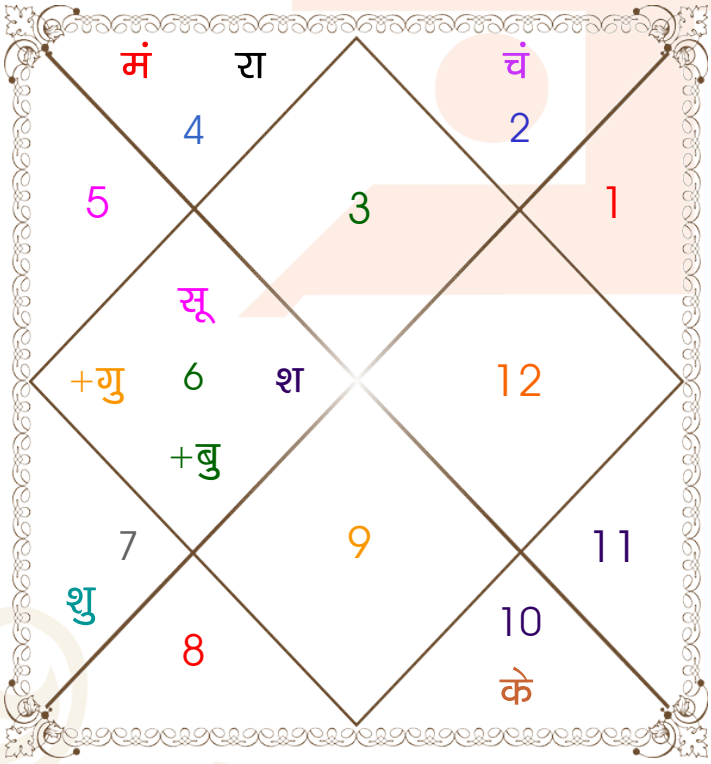

चन्द्र कुंडली

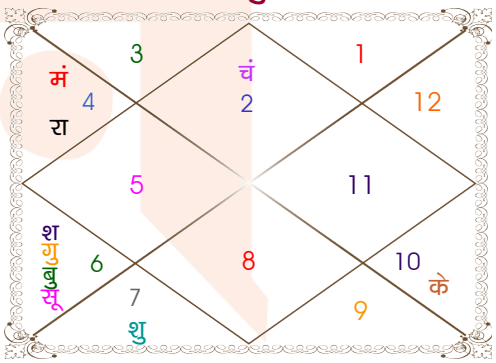

नवमांश कुंडली

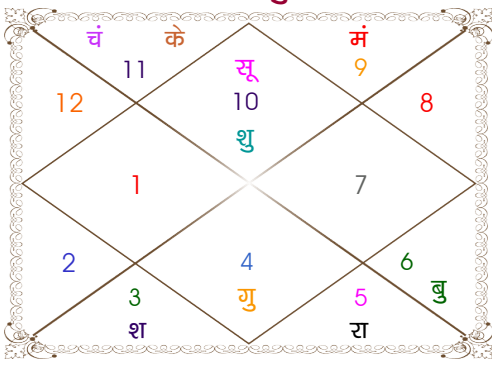

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी

श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश

9827998836,9425878602

astrosandeep90@gmail.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	वृष	26:00:34	मिथुन	12:44:24
2	मिथुन	26:00:34	कर्क	09:16:44
3	कर्क	22:32:53	सिंह	05:49:03
4	सिंह	19:05:13	कन्या	02:21:22
5	कन्या	19:05:13	तुला	05:49:03
6	तुला	22:32:53	वृश्चिक	09:16:44
7	वृश्चिक	26:00:34	धनु	12:44:24
8	धनु	26:00:34	मकर	09:16:44
9	मकर	22:32:53	कुम्भ	05:49:03
10	कुम्भ	19:05:13	मीन	02:21:22
11	मीन	19:05:13	मेष	05:49:03
12	मेष	22:32:53	वृष	09:16:44

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	12:44:24
2	कर्क	06:31:05
3	सिंह	02:18:33
4	कन्या	02:21:22
5	तुला	06:26:42
6	वृश्चिक	10:58:41
7	धनु	12:44:24
8	मकर	06:31:05
9	कुम्भ	02:18:33
10	मीन	02:21:22
11	मेष	06:26:42
12	वृष	10:58:41

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी
उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा
उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी

चलित कुंडली

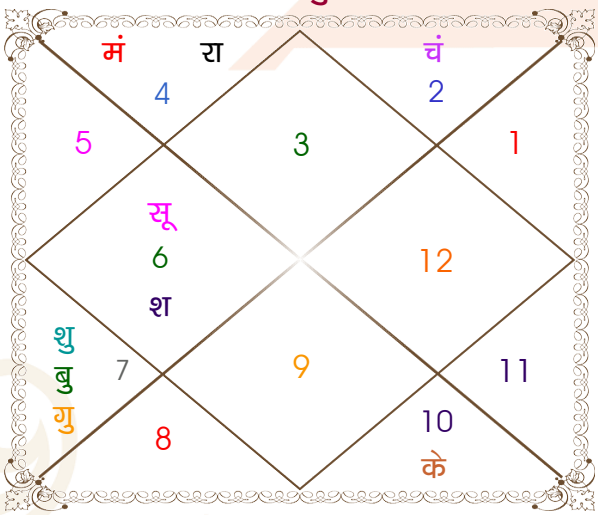

भाव कुंडली

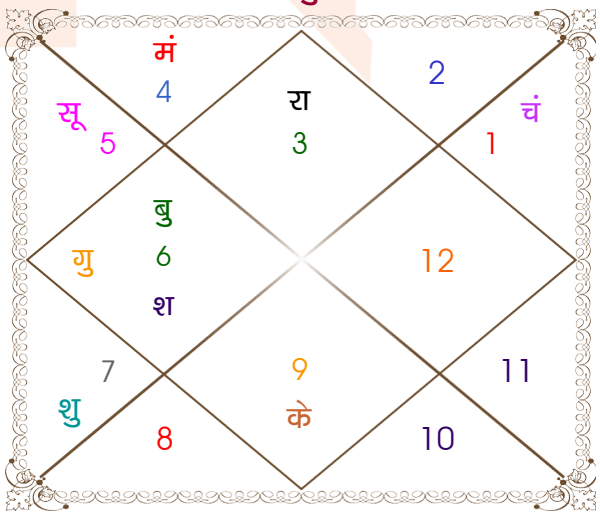

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : सूर्य 2 वर्ष 3 मास 6 दिन

सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष	
19/09/1981		26/12/1983		25/12/1993		25/12/2000		25/12/2018	
26/12/1983		25/12/1993		25/12/2000		25/12/2018		25/12/2034	
	00/00/0000	चंद्र	25/10/1984	मंगल	23/05/1994	राहु	07/09/2003	गुरु	12/02/2021
	00/00/0000	मंगल	26/05/1985	राहु	11/06/1995	गुरु	31/01/2006	शनि	26/08/2023
	00/00/0000	राहु	25/11/1986	गुरु	17/05/1996	शनि	07/12/2008	बुध	01/12/2025
	00/00/0000	गुरु	26/03/1988	शनि	26/06/1997	बुध	26/06/2011	केतु	07/11/2026
	19/09/1981	शनि	25/10/1989	बुध	23/06/1998	केतु	14/07/2012	शुक्र	08/07/2029
शनि	13/10/1981	बुध	27/03/1991	केतु	19/11/1998	शुक्र	14/07/2015	सूर्य	26/04/2030
बुध	20/08/1982	केतु	26/10/1991	शुक्र	19/01/2000	सूर्य	07/06/2016	चंद्र	26/08/2031
केतु	25/12/1982	शुक्र	26/06/1993	सूर्य	26/05/2000	चंद्र	07/12/2017	मंगल	01/08/2032
शुक्र	26/12/1983	सूर्य	25/12/1993	चंद्र	25/12/2000	मंगल	25/12/2018	राहु	25/12/2034

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
25/12/2034		25/12/2053		25/12/2070		25/12/2077		25/12/2097	
25/12/2053		25/12/2070		25/12/2077		25/12/2097		00/00/0000	
शनि	28/12/2037	बुध	23/05/2056	केतु	24/05/2071	शुक्र	26/04/2081	सूर्य	14/04/2098
बुध	06/09/2040	केतु	20/05/2057	शुक्र	23/07/2072	सूर्य	26/04/2082	चंद्र	13/10/2098
केतु	16/10/2041	शुक्र	20/03/2060	सूर्य	28/11/2072	चंद्र	26/12/2083	मंगल	18/02/2099
शुक्र	16/12/2044	सूर्य	24/01/2061	चंद्र	29/06/2073	मंगल	24/02/2085	राहु	13/01/2100
सूर्य	28/11/2045	चंद्र	26/06/2062	मंगल	25/11/2073	राहु	25/02/2088	गुरु	01/11/2100
चंद्र	29/06/2047	मंगल	23/06/2063	राहु	13/12/2074	गुरु	26/10/2090	शनि	20/09/2101
मंगल	07/08/2048	राहु	09/01/2066	गुरु	19/11/2075	शनि	25/12/2093		00/00/0000
राहु	14/06/2051	गुरु	16/04/2068	शनि	28/12/2076	बुध	25/10/2096		00/00/0000
गुरु	25/12/2053	शनि	25/12/2070	बुध	25/12/2077	केतु	25/12/2097		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल सूर्य 2 वर्ष 3 मा 9 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र	
26/08/2023		01/12/2025		07/11/2026		08/07/2029		26/04/2030	
01/12/2025		07/11/2026		08/07/2029		26/04/2030		26/08/2031	
बुध	21/12/2023	केतु	21/12/2025	शुक्र	18/04/2027	सूर्य	22/07/2029	चंद्र	06/06/2030
केतु	07/02/2024	शुक्र	16/02/2026	सूर्य	06/06/2027	चंद्र	16/08/2029	मंगल	04/07/2030
शुक्र	24/06/2024	सूर्य	05/03/2026	चंद्र	26/08/2027	मंगल	02/09/2029	राहु	15/09/2030
सूर्य	05/08/2024	चंद्र	02/04/2026	मंगल	22/10/2027	राहु	16/10/2029	गुरु	19/11/2030
चंद्र	13/10/2024	मंगल	22/04/2026	राहु	16/03/2028	गुरु	24/11/2029	शनि	04/02/2031
मंगल	30/11/2024	राहु	12/06/2026	गुरु	24/07/2028	शनि	09/01/2030	बुध	14/04/2031
राहु	03/04/2025	गुरु	27/07/2026	शनि	25/12/2028	बुध	19/02/2030	केतु	12/05/2031
गुरु	23/07/2025	शनि	19/09/2026	बुध	12/05/2029	केतु	08/03/2030	शुक्र	02/08/2031
शनि	01/12/2025	बुध	07/11/2026	केतु	08/07/2029	शुक्र	26/04/2030	सूर्य	26/08/2031

गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध		शनि - केतु	
26/08/2031		01/08/2032		25/12/2034		28/12/2037		06/09/2040	
01/08/2032		25/12/2034		28/12/2037		06/09/2040		16/10/2041	
मंगल	15/09/2031	राहु	10/12/2032	शनि	17/06/2035	बुध	16/05/2038	केतु	30/09/2040
राहु	05/11/2031	गुरु	06/04/2033	बुध	20/11/2035	केतु	13/07/2038	शुक्र	06/12/2040
गुरु	20/12/2031	शनि	23/08/2033	केतु	23/01/2036	शुक्र	24/12/2038	सूर्य	27/12/2040
शनि	12/02/2032	बुध	25/12/2033	शुक्र	24/07/2036	सूर्य	11/02/2039	चंद्र	29/01/2041
बुध	01/04/2032	केतु	14/02/2034	सूर्य	17/09/2036	चंद्र	04/05/2039	मंगल	22/02/2041
केतु	21/04/2032	शुक्र	10/07/2034	चंद्र	18/12/2036	मंगल	30/06/2039	राहु	24/04/2041
शुक्र	16/06/2032	सूर्य	23/08/2034	मंगल	20/02/2037	राहु	25/11/2039	गुरु	17/06/2041
सूर्य	03/07/2032	चंद्र	04/11/2034	राहु	04/08/2037	गुरु	04/04/2040	शनि	20/08/2041
चंद्र	01/08/2032	मंगल	25/12/2034	गुरु	28/12/2037	शनि	06/09/2040	बुध	16/10/2041

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
16/10/2041		16/12/2044		28/11/2045		29/06/2047		07/08/2048	
16/12/2044		28/11/2045		29/06/2047		07/08/2048		14/06/2051	
शुक्र	27/04/2042	सूर्य	02/01/2045	चंद्र	15/01/2046	मंगल	23/07/2047	राहु	10/01/2049
सूर्य	24/06/2042	चंद्र	31/01/2045	मंगल	18/02/2046	राहु	21/09/2047	गुरु	29/05/2049
चंद्र	28/09/2042	मंगल	20/02/2045	राहु	15/05/2046	गुरु	14/11/2047	शनि	10/11/2049
मंगल	05/12/2042	राहु	13/04/2045	गुरु	01/08/2046	शनि	17/01/2048	बुध	06/04/2050
राहु	27/05/2043	गुरु	30/05/2045	शनि	31/10/2046	बुध	15/03/2048	केतु	06/06/2050
गुरु	28/10/2043	शनि	24/07/2045	बुध	21/01/2047	केतु	07/04/2048	शुक्र	26/11/2050
शनि	28/04/2044	बुध	11/09/2045	केतु	24/02/2047	शुक्र	14/06/2048	सूर्य	17/01/2051
बुध	09/10/2044	केतु	01/10/2045	शुक्र	31/05/2047	सूर्य	04/07/2048	चंद्र	14/04/2051
केतु	16/12/2044	शुक्र	28/11/2045	सूर्य	29/06/2047	चंद्र	07/08/2048	मंगल	14/06/2051

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	1
भाग्यांक	2
मित्र अंक	1, 4, 8, 9, 2
शत्रु अंक	3, 5, 6
शुभ वर्ष	19,28,37,46,55
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	मकर, कुम्भ
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	विष्णु
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सुख, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	83%	सन्तति सुख, कम खर्च
नीलम	शनि	70%	सुख, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
पुखराज	गुरु	56%	सुख, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
माणिक्य	सूर्य	55%	सुख, पराक्रम
मोती	चंद्र	47%	व्यय, धन हानि
गोमेद	राहु	31%	धन हानि, व्यय
लहसुनिया	केतु	28%	दुर्घटना, ग्रह कलेश
मूंगा	मंगल	9%	धन हानि, हानि, शत्रु व रोग

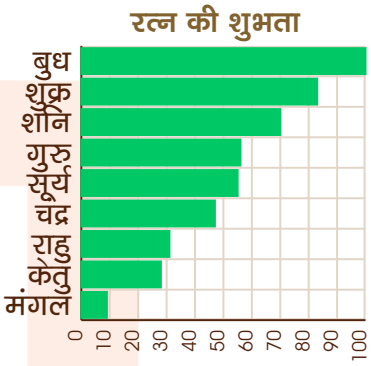

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	26/12/1983	67%	55%	22%	100%	62%	71%	58%	6%	3%
चंद्र	25/12/1993	61%	61%	9%	100%	56%	83%	70%	6%	3%
मंगल	25/12/2000	61%	55%	34%	95%	62%	83%	70%	6%	41%
राहु	25/12/2018	34%	22%	0%	100%	56%	89%	77%	53%	3%
गुरु	25/12/2034	61%	55%	22%	95%	69%	71%	70%	31%	28%
शनि	25/12/2053	34%	22%	0%	100%	56%	89%	83%	44%	3%
बुध	25/12/2070	61%	22%	9%	100%	56%	89%	70%	31%	28%
केतु	25/12/2077	34%	22%	22%	100%	56%	89%	58%	6%	52%
शुक्र	25/12/2097	34%	22%	9%	100%	56%	96%	77%	44%	41%

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	----------

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	03/06/2027-20/10/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती द्वितीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	08/12/2046-06/03/2049	10/07/2049-04/12/2049	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	11/07/2061-13/02/2062	07/03/2062-24/08/2063	06/02/2064-09/05/2064
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	दम्पति
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	अल्प बचत
साढेसाती द्वितीय ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	स्वास्थ्य
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	पराक्रम हानि

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति द्वितीय भाव में है। कुंडली में यह भाव मुख्य रूप से वाणी तथा कुटुम्ब का प्रतिनिधित्व करता है। अतः मंगल के प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों में मतभेद का वातावरण बन सकता है। इसी कारण दक्षिण भारत में इसे कुज दोष भी माना जाता है। आपकी वाणी में भी ओजस्विता का भाव रहेगा तथा लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। धनार्जन के लिए यह स्थिति उत्तम रहेगी तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप इच्छित धन एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके पारिवारिक जनों को सन्तुष्ट करने में समर्थ रहेंगे।

कुंडली में द्वितीय भावस्थ मंगल की पंचम भाव पर दृष्टि से पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा जीवन में उनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है साथ ही उच्च शिक्षा अर्जित करने में भी आप सफल रहेंगे। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा। यदा कदा पित या गर्मी से कोई परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे। नवम भाव पर मंगल की दृष्टि के प्रभाव से आप अपने कार्यों एवं पराक्रम से भाग्य का निर्माण करेंगे। जीवन में उन्नति के पथ पर अग्रसर रहेंगे साथ ही आप भाग्य वादी न होकर कर्म करने में विश्वास रखेंगे।

इस प्रकार आप द्वितीय भावस्थ मंगल के प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि को बनाएं रखेंगे तथा पारिवारिक जनों का उचित रूप से पालन करेंगे साथ ही वे भी आपको यथोचित सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त अपने दाम्पत्य जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए। जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक जीवन में सुखों का उपभोग करेंगे तथा एक दूसरे को सहयोग प्रदान करके

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

मानसिक सन्तुष्टि प्राप्त करेंगे।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में कुलिक नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्य मान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इस योग के कारण जातक के खर्च सामान्य से कुछ अधिक रहता है। जिससे आर्थिक क्लेश समय-समय पर होता रहता है। सुख का थोड़ा अभाव रहता है।

इस योग के कारण जातक के जीवन में समय-समय पर संघर्ष करना पड़ता हैऔर स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव आती रहती है एवं स्वास्थ्य में गिरावट के कारण जातक अपने भविष्य (वृद्धावस्था) को लेकर चिन्तित रहता है। जातक का वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी कभी अशान्त हो जाता है। मित्रगण समय पर थोड़ा बहुत धोखा देते हैं और जातक को अपने परिवार के सदस्यों से कभी मनमुटाव हो जाता है।

इस योग के कारण जातक को सन्तान सुख में थोड़ा बहुत बाधा रहती है। पुत्र होकर भी आज्ञा का प्रायः पालन नहीं करता और सन्तान प्रायः क्रूर एवं दुष्ट स्वभाव का हो जाता है। कभी-कभी भूत प्रेतों से जातक परेशान होता है। जीवन का उत्तरार्ध थोड़ा बहुत कष्टमय व्यतीत होता है एवं जातक मानसिक रूप से परेशानी महसूस करता है। लेकिन सब कुछ होने के बाद भी जातक को व्यापार में मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है और अपने जीवन में अनेक सम्मान भी प्राप्त करता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रूमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन, लोहे की अंगूठी धारण करें।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर, रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगेरे।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

आपकी कुडली में किसी भी प्रकार का पितृदोष विद्यमान नहीं है, अतः आपको जीवन में पितृदोष के कारण कष्ट या परेशानी नहीं होगी।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

ग्रह फल

सूर्य

चतुर्थभाव में सूर्य हो तो जातक परमसुन्दर, कठोर, पितृधननाशक, चिन्तास्त, भाईयों से वैर करने वाला, गुप्तविद्या प्रिय एवं वाहन सुखहीन होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म काल में सूर्य चतुर्थ भाव में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय होंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन के समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपका यत्नपूर्वक सहयोग करते रहेंगे। पिता से आपको धन, वाहन तथा अन्य प्रकार से सम्पत्ति अर्जित करते रहेंगे। इसके साथ ही नौकरी तथा व्यापार में भी आप उनसे सहयोग प्राप्त करते रहेंगे तथा उन्हीं के सहयोग से उन्नति भी करेंगे।

आप के मन में उनके प्रति सम्मान एवं आदर का भाव विद्यमान रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन में भी रुचि रहेगी। आपके परस्पर मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु वह क्षणिक रहेगा। इसके अतिरिक्त जीवन में आप हमेशा उनके सुख दुःख का भी ध्यान रखेंगे तथा अवसरानुकूल वांछित सहायता भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्तप्रिय, क्रोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।,

वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सुन्दर प्रसन्नचित्तवाला, कामी, दान करने वाला, अधिक कन्या सन्तति वाला, शान्त, कफरोगी, सुखी, कुशा बुद्धिवाला, सुगठित शरीरवाला, धनी, सन्तोषी, चंचलमन, परलिंगी के प्रति आकर्षण, खाने-पीने का शौकीन एवं लोकप्रिय होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

चतुर्थभाव में बुध हो तो जातक पण्डित भाग्यवान् नीतिवान्, नीतिज्ञ, लेखक, विद्वान्, बन्धुप्रेमी, उदार, गतिप्रिय, आलसी , स्थूलदेही, वाहनसुखी एवं दानी होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

कन्या राशि में गुरु हो तो जातक सुखी, भोगी, विलासी, चित्रकला, निपुण, चंचल, उच्चाकांक्षी, स्वार्थी, भाग्यवान्, विद्वान एवं सन्तोषी होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

तुला राशि में शुक्र हो तो जातक विलासी, कलानिपुण, प्रवासी, यशस्वी, कार्यदक्ष,

कुशाबुद्धि, उदार, दार्शनिक, सुन्दर, सुखी विवाहित जीवन, अभिमानी, बौद्धिक कामों में रुचि, कविता और उपन्यास लिखने में रुचि एवं संतुलित स्वभाव होता है।

शनि

चतुर्थभाव में शनि हो तो जातक अपयशी, बलहीन, धूर्त, कपटी, शीघ्रकोपी, कृशदेही, उदासीन,वातपित्तयुक्त एवं भाग्यवान् होता है।

कन्या राशि में शनि हो तो जातक मितभाषी, परोपकारी, लेखक, कवि, सम्पादक, धनवान्, बलवान्, निश्चित कार्य कर्त्ता, ईर्ष्यायलु स्वभाव, असभ्य, निर्बलस्वास्थ्य एवं पुराने विचारों वाला होता है।

राहु

द्वितीय भाव में राहु हो तो जातक संहशील, अल्पधनवान्, कठोरभाषी, कुटुम्बहीन, अल्पसन्तति, मात्सर्ययुक्त एवं परदेशगामी होता है।

कर्क राशि में राहु हो तो जातक चतुर, उदार, रोगी, अनेकों शत्रुओं वाला, धोखेबाज, धनहीन एवं पराजि होता है।

केतु

अष्टम भाव में केतु हो तो जातक दुर्बुद्धि, स्त्रीद्वेषी, चालाक, दुष्टजनसेवी, तेजहीन, नीच, स्त्री की कुण्डली में पति के लिए अशुभ एवं अल्पायु होता है।

मकर राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमशील, पराक्रमी जन्म स्थान छोड़कर जाने वाला, प्रसिद्ध एवं तेजस्वी होता है।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(25/12/2018 - 25/12/2034)

आपकी कुण्डली में गुरु की महादशा 25/12/2018 को आरम्भ और 25/12/2034 को समाप्त होगी। इसकी अवधि सोलह वर्ष है।

गुरु चतुर्थ भाव में स्थित है और मातृभूमि, माता, निजी मामले, गुप्त जीवन, खेती, बगान पैतृक सम्पत्ति, शिक्षा-वृत्ति, जल, तालाब, दूध, नदी और झील के द्योतक इस भाव को बली कर रहा है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है। चौथे भाव में स्थित इस ग्रह की आपकी जन्मकुण्डली के आठवें, दसवें और बारहवें भावों पर दृष्टि है और यह इन भावों पर शुभ प्रभाव डाल रहा है। अतः सोलह वर्षों की यह दशा आपके लिए अनुकूल, सुख तथा समृद्धिदायक होगी।

स्वास्थ्य :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु चतुर्थ भाव को बली कर रहा है। आपका जीवन सुखी और स्वस्थ होगा और कोई गम्भीर बीमारी या कष्ट नहीं होगा। आप अपना कार्य सामान्य ढंग से पूरा करेंगें।

धन-सम्पत्ति :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (बारहवें भाव के अतिरिक्त) आठवें और 'मंगलीय कार्य' तथा व्यवसाय के दसवें भाव पर है। इस दशा के दौरान आपको सम्पत्ति में वृद्धि करनें के पर्याप्त अवसर मिलेंगे। आप नयी गाड़ियाँ तथा नया मकान खरीद सकते हैं। आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होगी।

व्यवसाय :

चतुर्थ भाव में स्थित गुरु की दृष्टि (12वें भाव के अतिरिक्त) 8वें तथा व्यवसाय, दीर्घायु और 'सुखकार्य' के 10वें भाव पर है, अतः आप अपने व्यवसाय में सफल होंगे, कार्यक्षेत्र में आगे रहेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, आपको अपनी व्यावसायिक वृत्ति में प्रगति के अच्छे अवसर मिलेंगे। आपके कार्य की आपके सहकर्मी तथा वरिष्ठ कर्मचारी सराहना करेंगे।

पारिवारिक जीवन :

चतुर्थ भाव अर्थात माता, जन्म और 'सुखस्थान' के भाव में स्थित गुरु के कारण इस दशा के दौरान आपका पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे। फलस्वरूप आपका पारिवारिक जीवन सद्भावपूर्ण रहेगा। परिवार में समरसता लाने में आपकी माता की भूमिका अहम होगी।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

चतुर्थ भाव, जो शिक्षा का भाव भी है, में स्थित गुरु के कारण आपकी शिक्षा उत्तम

होगी और आप सफल होंगे।

ज्योतिषाचार्य पं. संदीप तिवारी
श्री धाम नरसिंहपुर मध्य प्रदेश
9827998836,9425878602
astrosandeep90@gmail.com

अंर्तदशा :- गुरु - बुध
(26/08/2023 - 01/12/2025)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 25/12/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 26/08/2023 को प्रारंभ होकर 01/12/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे और प्रसन्न रहेंगे। भूमि आदि अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। बहुत से मित्र होंगे जो सहायक सिद्ध होंगे। परिवारजन और संबंधी समृद्ध बनेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। कार्यों में सफलता मिलेगी। साख में वृद्धि होगी; ज्ञान के लिए प्रसिद्ध होंगे। कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। लक्ष्य की ओर एकाग्रचित्त रहेंगे।

आपके जीवनसाथी कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। आपके पिता उच्चपद प्राप्त करेंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए धनलाभ, स्पर्धियों पर विजय, उत्तम शिक्षा का संकेत है।

आपकी संतान को परिश्रम अधिक करना चाहिए। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल होंगे। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। स्नायविक थकान से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए हरे वस्त्र, कपूर और मूंग की दाल दान करें।

अंर्तदशा :- गुरु - केतु
(01/12/2025 - 07/11/2026)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 25/12/2018 प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चौथी अंतर्दशा केतु की होगी जिसकी अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 01/12/2025 को प्रारंभ होकर 07/11/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु मोक्ष और शल्य चिकित्सा का कारक है।

इस अवधि में आप धन संचित करेंगे। जीवनसाथी या साझेदार के माध्यम से धनागम होगा। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। घरेलू सुख रहेगा। भौतिक सुख उपलब्ध रहेंगे। प्रभावशाली व्यक्तियों से मित्रता हो सकती है। रिश्तेदारों से संबंध उत्तम रहेंगे।

आपके जीवनसाथी को सब सुख नसीब होंगे। आपके पिता की यात्रा हो सकती है, खर्चे बढ़ेंगे, अचानक लाभ हो सकता है। माता को निवेश से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए नौकरी से लाभ, सफलता और व्यापार में लाभ का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना होगा।

अगर वे कार्यरत हैं तो अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है, वांछित कार्य पूरे होंगे। परामर्शदाताओं को सबसे सहायता मिलेगी, अप्रत्याशित लाभ होगा, कार्य का विस्तार होगा। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें। साधारण बीमारियों को अनदेखा न करें। अरिष्ट से बचाव के लिए भूरा कुत्ता पालें।

अंर्तदशा :- गुरु - शुक्र
(07/11/2026 - 08/07/2029)

आपके लिए बृहस्पति महादशा 25/12/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में पांचवी अंतर्दशा शुक्र की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 8 मास रहेगी। आपके लिए यह 07/11/2026 को प्रारंभ होकर 08/07/2029 के समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शुक्र सौंदर्य, सुख और कला का कारक है।

इस अवधि में आपको पारिवारिक सुख मिलेगा; सब सुविधाएं उपलब्ध होंगी। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। सरकारी नौकरी या उच्चपद प्राप्त कर सकते हैं। प्रगति की ओर उन्मुख रहेंगे। प्रसन्नचित्त होंगे। मित्र सहायता करेंगे। प्रसिद्धि और धन की प्राप्ति होगी। शिशु का जन्म हो सकता है। आकांक्षाएं पूर्ण होंगी। शिक्षा उत्तम होगी। बड़े भाई-बहनों और चाचा से मधुर संबंध रहेंगे। मानसिक शांति और घरेलू सुख रहेंगे। धनागम होगा; समृद्ध बनेंगे।

आपके जीवनसाथी के धन में वृद्धि होगी। आपके पिता धनी बनेंगे; लंबी यात्रा हो सकती है। माता को विभिन्न माध्यमों से धन मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए आकांक्षाओं की पूर्ति, विवाह, साझेदारी में सफलता और व्यापार में लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे, प्रभाव बढ़ेगा, प्रसिद्ध होंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो परिवर्तन हो सकता है; स्पर्धियों की संख्या में कमी आएगी। परामर्शदाताओं को अप्रत्याशित लाभ हो सकता है, समृद्धि बढ़ेगी। व्यापारी खूब धन कमाएंगे, उत्तम कर्मचारी मिलेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचन तंत्र के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए भोजन करने से पहले गाय को रोटी दें।

अंर्तदशा :- गुरु - सूर्य
(08/07/2029 - 26/04/2030)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 25/12/2018 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में छठी अंतर्दशा सूर्य की होगी जिसकी अवधि 9 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह

08/07/2029 को प्रारंभ होकर 26/04/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य आत्मा, पिता, कार्यक्षमता और स्वास्थ्य का कारक है।

इस अवधि में आपका घर सुखी रहेगा, फिर भी आप थोड़ा सावधान रहें और घर में ज्यादा कठोर व्यवहार न करें, अन्यथा संबंधों में कटुता आ सकती है। मेहमानों से घर में हंसी-खुशी का वातावरण रहेगा। मित्रों की संख्या पर्याप्त होगी। भूमि क्रय कर सकते हैं। उत्तम आवास और वाहन सुख रहेगा। शिक्षा उत्तम होगी। प्रसिद्धि, प्रोन्नति और कार्यों में सफलता का संकेत है। पिता और उच्चपदस्थ व्यक्तियों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन आ सकता है। माता के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, सफल रहेंगी, जीवन में प्रगति होगी। आपके भाई-बहनों के लिए धनार्जन, कार्यों की समाप्ति, प्रसन्नता, उत्तम स्वास्थ्य और शत्रुओं के नाश का संकेत है।

आपकी संतान को पढ़ाई में अधिक परिश्रम करना चाहिए। अगर वे कार्यरत हैं तो खर्चे बढ़ेंगे, यात्राएं होंगी।

अगर आप सेवारत हैं तो धनार्जन होगा, उच्चपद मिलेगा, सरकार से लाभ होगा। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा। व्यापारी खूब धन कमाएंगे और सफलता प्राप्त करेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अधिक उत्तेजना और अत्यधिक परिश्रम से बचें। अरिष्ट से बचाव के लिए सूर्य गायत्री मंत्र का जाप करें।